Impact Factor – 6.625 E-ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

International E-Research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

December 2020 Special Issue 256 (C)

Multidisciplinary Research

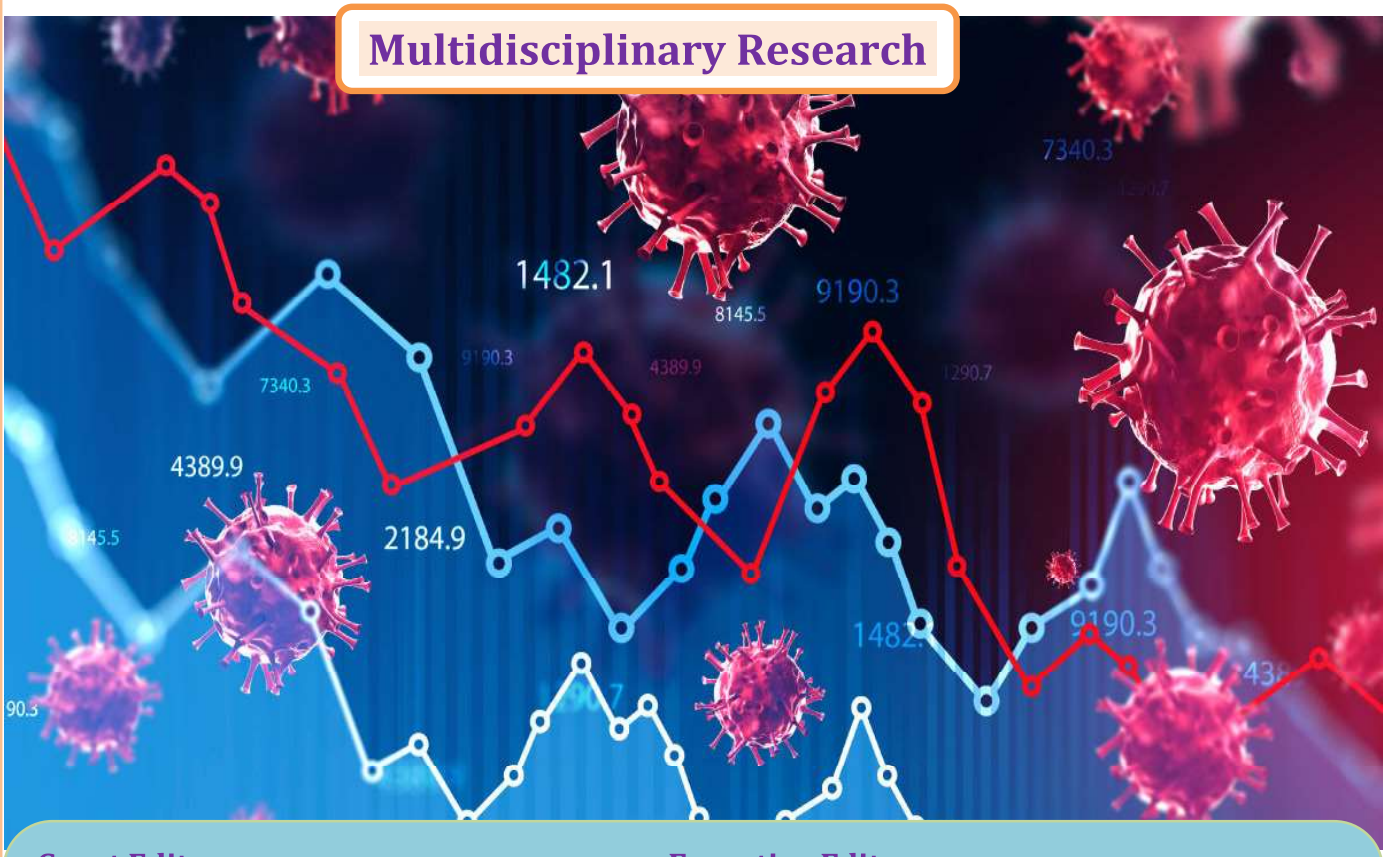

Guest Editor -
Prof. Dr. Rajani Shikhare,
Principal,
R. B. Attal College, Georai
Dist. - Beed.

Executive Editors :
Dr. B. D. Rupnar,
Dr. P. P. Pangrikar
Mr. S.S. Nagare
Mr. Ranjeet Pagore,

Chief Editor : Dr. Dhanraj T. Dhangar

This Journal is indexed in :
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmoc Impact Factor (CIF)
- Global Impact Factor (GIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

For Details Visit To : www.researchjourney.net

SWATIDHAN PUBLICATIONS

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION

Impact Factor – 6.625 **E-ISSN – 2348-7143**

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

International E-Research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

December 2020 Special Issue 256 (C)

Multidisciplinary Research

Guest Editor -
Prof. Dr. Rajani Shikhare,
Principal,
R. B. Attal College, Georai
Dist. - Beed.

Chief Editor : Dr. Dhanraj T. Dhangar

Executive Editors :
Dr. B. D. Rupnar,
Dr. P. P. Pangrikar
Mr. S.S. Nagare
Mr. Ranjeet Pagore,

Our Editors have reviewed papers with experts' committee, and they have checked the papers on their level best to stop furtive literature. Except it, the respective authors of the papers are responsible for originality of the papers and intensive thoughts in the papers. Nobody can republish these papers without pre-permission of the publisher.

- Chief & Executive Editor

SWATIDHAN INTERNATIONAL PUBLICATIONS
For Details Visit To : www.researchjourney.net

*Cover Photo (Source) : Internet

© All rights reserved with the authors & publisher **Price : Rs. 1000/-**

INDEX

No.	Title of the Paper	Author's Name	Page No.
1	Releastic Approach in R. K. Narayan's Novel *'The Guide'*	**Dr.V. S. Bandal**	04
2	Cultural Studies : An Introduction	**Mr. Arun Jadhav**	11
3	Sanitation and Social Change	**Mr. R. B. Kale**	13
4	Rotating Fluid of Magneto Hydrodynamics Flow Past an Impulsively Started Infinite Vertical Plate	**Vinod Kulkarni, Vijay Sangale**	16
5	An Efficient Synthesis of 5-Substituted 1H-Tetrazole Using Eton's Reagent in Water	**Rupnar B.D, Shirsat A.J. Jadhav S. B. Bhagat S.S.**	22
6	Crop Insurance in India	**B.S.Jogdand**	27
7	Outline of Modern Research	**Dr. Laxmikant Jirewad**	31
8	Second ARCs Views on Right to Information Act	**Hanmant Helambe**	35
9	An Introduction to Smart Libraries	**R.B. Pagore, Dr. B. V. Chalukya**	38
10	Impact of Cassine Albens Gum on Incidence of Seed Mycoflora in Different Crop Seeds	**K.V. Badar, P.P. Pangrikar**	47
11	Synthesis, Characterization and Antimicrobial Analysis of Some New Substituted Pyrazoles From Chromones	**Amol Shirsat, Balaji Rupnar, Sunil Bhagat**	52
12	Synthesis and Characterization of Ni (II) and Mn (II) Metal Complexes of Novel Schiff's Base Ligand	**Vrushali Gavhane, Anjali Rajbhoj, Suresh Gaikwad**	57
13	Image Classification Using Fuzzy Logic	**Pradeep Gaikwad**	61
14	Resistivity of Food Preservative Potassium Meta –Bisulphate Using (TDR) Technique	**S. G Badhe, S. N. Helambe, T. A.Prajapati**	65
15	Studies on Effects of Gamma Radiation on Iron Oxide in the Energy Range 122-1330 Kev	**Pradip S. Dahinde**	68
16	Effect of N-Fertilizers on Silage Fermentation	**Smita Basole , Sunita Bhosle and Prashant Pangrikar**	74
17	Investment Awareness Program (IAP): Need in Uncertain Market Conditions	**Dr. Sandip Vanjari**	79
18	Impact of Covid19 on Health and Hidden Cost of Covid	**Dr. Vivek Waykar**	83
19	Studies on Physico-Chemical Parameters of Bore Well Water in Satara Parisar, Aurangabad, India	**Jagannath Godse, Sanjay Ubale**	86
20	Synthesis and Antimicrobial Screening of Novel Pyrazole Substituted Chlorochromones	**S. S. Bhagat, B. D. Rupnar, A. J.Shirsat**	89
21	Women's Human Rights & Women Empowerment	**Dr. S.N. Satale**	92
22	Biodiversity of Butterflies Around Georai Region	**A. M. Budrukkar**	96
23	चूडिया की खनखनाहट और पायलों से फुटते विद्रोह का बिगुल : 'बेघर सपने'	**संतोष नागरे**	99
24	लोकनाट्य आणि समाजशास्त्र	**डॉ. संदीप बनसोडे**	105
25	मराठी भाषा आणि साहित्यासाठी एकविसाव्या शतकाची सुरुवात	**डॉ. समाधान इंगळे**	107
26	दलित स्त्री जीवन के शोषण का जिवंत दस्तावेज : 'जीवन हमारा'	**प्रो. रजनी शिखरे, राजाराम जाधव**	110

'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) – 6.625 (2019),
Special Issue -256 (C) : Multidisciplinary Research
Peer Reviewed Journal
E-ISSN : 2348-7143
Dec. 2020

चूडिंयों की खनखनाहट और पायलों की झनकार से फूटते विद्रोह का बिगुल : 'बेघर सपने'

संतोष नागरे
सहा.प्रा.-हिंन्दी विभाग
र.भ. अट्टल महाविद्यालय,
गेवराई जि.बीड महाराष्ट्र
Email - nagresantosh1@gmail.com

आदिवासी और स्त्री अस्मिताओं को लेकर सशक्त काव्य लेखन करनेवाली निर्मला पुतुल समकालीन हिंदी कविता की शीर्षस्थ रचनाकार हैं। 'नगाडे की तरह बजते शब्द', 'अपने घर की तलाश में' के पश्चात आपका तृतीय काव्य-संग्रह 'बेघर सपने' सन 2014 में आधार प्रकाशन, पंचकूला, हरियाणा से प्रकाशित हुआ। प्रस्तुत रचना में 52 कविताएँ हैं। जो तमाम संघर्षरत महिलाओं के लिए समर्पित हैं। प्रस्तुत रचना की अधिकांश कविताओं के केंद्र में स्त्री है। स्त्री जीवन के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालती ये कविताएँ पितृसत्ताक समाज के दोहरे मानदंडो व्दारा ठगे जाने की पीड़ा को बयान करती है। साथ ही अपनी मुक्ति के लिए संघर्ष का नया सौंदर्यशास्त्र भी गढ़ती है। प्रो.सरस्वती भल्ला इस संदर्भ में कहती हैं, - " स्त्रियों का हाशियों की दुनिया को तोड़ना और अधिकारों के प्रश्न पर सजग होना ही स्त्री मुक्ति का विमर्श है।.. स्त्री विमर्श से उठनेवाले प्रश्न मात्र मुक्ति से ही नहीं जुड़े हैं, अपितु पितृसत्तात्मक समाज के दोहरे मानदंड, पितृक मूल्य, लिंगभेद की राजनीति तथा स्त्री उत्पीड़न के अन्तर्निहित कारणों को समझने की दृष्टि भी देते हैं।"[1]

अपनी कविताओं में पितृसत्ताक समाज की अमानवीयता के विरुध्द आवाज उठाते हुए अपनी समसामयिक स्थितियों से जूझती स्त्री की जीवटता, संवेदनशीलता, मानवीयता, परोपकारिता, प्रामाणिकता, श्रमशीलता तथा संघर्षशीलता के माध्यम से निर्मला पुतुल स्त्री विमर्श को नये आयाम प्रदान कर उसे विस्तार देती है। उमा शंकर चौधरी इस संदर्भ में ठीक ही कहते हैं, - "एक आदिवासी स्त्री का जीवन, संघर्ष, दुख और उसकी पराजय सब यहाँ बहुत ही विश्वसनीय रुप में आया है। इन कविताओं में विचार है या कहें वर्षों से चला आ रहा पूरा विमर्श है परन्तु यह कहीं भी विमर्श की कविता नहीं लगती ।"[2]

स्त्री जीवन का इतिहास मूलत : पुरुषप्रधान व्यवस्था व्दारा ठगे जाने का रहा है। 'तुम्हारे हाथ' कविता पुरुषप्रधान व्यवस्था व्दारा ठगे जाने की पीड़ा को बयान करती है। एक स्त्री अजनबी हाथों पर भरोसा रख अथाह सागर, दुर्गम रास्ते तथा अपनों से दूर होकर साधना चाहती है सात सूर, सात रंग और सात लोक पार कर पहुँचना चाहती है सातवें आसमान पर। दुर्भाग्य से उसका सहारा बने वही हाथ उसकी मुक्ति कामना के पंख काटकर उसे बेसहारा कर देते हैं। कोई भी पति अपनी पत्नी का स्वतंत्र अस्तित्व कभी स्वीकार नहीं कर पाता। अत: बिना अस्तित्व के मर्दो की थाती बनकर जीवन गुजारना ' औरत' की कहानी रही है। निर्मला पुतुल कहती हैं-

"सबकुछ सहती है / मन ही मन गुनती है
लकड़ी सी घुनती है / आँसू पीती है
घूँट-घूँट कर जीती है / मोम सी पिघलती है
कुछ न कहती है / रोज जन्मती मरती है
घर भर की पीड़ा हरती है / सबकी सुनती है
छण-छण जलती है / होठों को सीती है,
बिन तेल की बाती है / अधलिखी पाती है
मर्दों की थाती है।"[3]

निर्मला पुतुल की 'किसी से कहा नहीं हमने' कविता में पुरुषप्रधान व्यवस्था की हां-में-हां न मिलाने और अन्याय-अत्याचार के विरुध्द आवाज उठाने पर इंसानो की बस्तियों में ही स्त्री के साथ किये जानेवाले जानवरान दुर्व्यवहारों का दर्दनाक चित्रण है। सबकी सुनने और कुछ न कहनेवाली स्त्री के विश्वास, त्याग, समर्पण की धज्जियाँ उड़ानेवाली संवेदनाहीन पुरुषप्रधान व्यवस्था से 'मिटा पाओगे सबकुछ' कविता में निर्मला पुतुल सीधा सवाल करती है-

"सीधे-सीधे पूछती हूँ तुमसे / रात के सन्नाटे में
क्या कभी काँपती नहीं है तुम्हारी रुह
क्या कुछ भी तुम्हें याद नहीं आती
सुनाई नहीं देती औरतों की हिचकियाँ
और मेरी चुप्पी / क्या तुम्हें सुनाई नहीं देती।"[4]

छल और छद्म से भरी पुरषप्रधान व्यवस्था की कथनी और करनी में विरोधाभास पाया जाता है। निर्मला पुतुल ने 'कुछ भी तो बचा नहीं सके तुम', 'ईश्वर से स्त्रियों की माँग' तथा 'वेश्या' कविता में इसकी पोल खोली है। 'ईश्वर से स्त्रियों की माँग' कविता में देवताओं व्दारा कोरी सहानुभूति दिखाते हुए स्त्रियों पर पुनः पुरुषप्रधान व्यवस्था रुपी सत्ता थोपे जाने का चित्रण है। 'वेश्या' कविता में स्त्री को वेश्या और वेश्या को स्त्री न बनानेवाली पुरुषप्रधान व्यवस्था की दोगली नीति का पर्दाफाश करती निर्मला पुतुल कहती हैं -

"पुरुष बनाता है स्त्री को वेश्या / वरना स्त्री वेश्या नहीं होती
वेश्या होने का मतलब / स्त्री होना नहीं है
और स्त्री होने का मतलब वेश्या होना नहीं है
वेश्या और स्त्री होना / दोनों अलग-अलग चीज हैं
यह अलग बात है कि
दोनों की जड़े एक जगह होती हैं।"[5]

पुरुषप्रधान व्यवस्था की उपभोक्तावादी मानसिकता के चलते सदियों से स्त्री का दैहिक शोषण होता आ रहा है। 'और तुम देखते रहे मेरा बलात्कार होना' कविता लिटीपाड़ा लबदा के घने जंगलों में बलात्कारित हुई मासूम बहनों की करुण कहानी है। 'अखबार बेचती लड़की' आज के विषाक्त माहौल में इस बात से बेखबर है की वह अपने आप को बेच रही है। 'स्वर्गवासी पिता के नाम पाती' कविता में पिय्यकडों, जुआरियों की शरारतों से अपनी लाड़ली की रक्षा के लिए हाथों में डंडा लिए हर समय मुस्तैद रहनेवाले पिता का स्मरण है। तो 'सबसे डरावनी रात' कविता महज बोतल भर दारु और एक मुर्गे पर सौदा कर, माँ व्दारा अपनी बेटी को अधेड भेड़ियो के हवाले कर दिये जाने की दर्द भरी दास्तान है। उसी काली अँधेरी सबसे डरावनी रात में सारी संवेदनाएँ, विश्वास, पवित्र रिश्ते की आस्था सबकुछ लूट गया। माँ की चुप्पी के पीछे छिपी उसकी मजबूरी तथा विवशता को समझने की कोशिश करती निर्मला पुतुल कहती हैं-

"यह क्या था
मेरी समझ में कुछ तो नहीं आता / क्या था वह
आखिर क्यों ऐसा हुआ / बोलो न माँ, चुप क्यों हो?"[6]

स्त्री को देवी के रुप में पूजनेवाले इस देश में न वह घर के भीतर सुरक्षित है न बाहर। 'दामिनी' कविता गली चौराहें पर खुलेआम की जानेवाली छेड़छाड़ से अपने आप को असुरक्षित महसूस करती स्त्री जीवन की दास्तान है। स्त्री को वस्तु के रुप में बेचने -खरीदने, तेजाब के हमलें, सामूहिक दुष्कर्म और हत्या, नैतिकता की सभी सीमाएँ लाँघकर साठ वर्षीय बूढे व्दारा पाँच वर्षीय बच्ची का बलात्कार की खबरों से 'आखिर कब तक', रंगते- सजते रहेंगे अखबार, विरोध करते-

करते थक गये प्रदर्शनकारियों के बावजूद भी इस देश में न थम रही स्त्री उत्पीड़न की घटनाओं पर प्रहार करती निर्मला पुतुल कहती हैं-

"आखिरी नहीं हो तुम / बलात्कार की लिस्ट में
आज भी तुम्हारी जैसी / कई दामिनी बलात्कारित होती रही हैं यहाँ
तुम्हारे बाद तो / थम ही नहीं रहा गैंगरेप
तेजाब फेंकने,दुष्कर्म कर हत्या कर देने
और उस साठ वर्षीय बूढ़े द्वारा
पाँच वर्षीय बच्ची का बलात्कार जैसी घटनाएँ।"[7]

स्त्री सुरक्षा के अभाव में लड़कियों का घटता औसत इस देश के लिए चिंता का विषय बना है। मौन धारण कर हाथों में जलती मोमबत्ती लेकर जनसमूह के निकलते मोर्चों, टी.वी. चैनलों पर राजनीतिज्ञों की गोल-मटोल बहसों तथा फास्ट ट्रॅक अदालतों के बावजूद इस देश की दामिनी को न्याय नहीं मिल पा रहा है। अत: 'दामिनी' को अब स्वयं रणचंडी, दुर्गा बन इस धरती पर राक्षसों का सरेआम वध करना होगा, तभी इस देश में लड़कियाँ सुरक्षित रहेगी। नर्मला पुतुल कहती हैं,-

"दामिनी !
तुम्हे आना होगा
रणचंडी बन, दुर्गा बन, फूलो भानो बन
हाथों में भाला, फरसा, कुल्हाड़ी लिए
आना ही होगा इस धरती पर
और ऐसे राक्षसों का सरेआम
बध्द करना होगा.... बध्द करना होगा।"[8]

आत्मरक्षा और आत्मसम्मान की भावना स्त्रियों में धीरे-धीरे विकसित हो रही है। प्राकृतिक संसाधनों की लूट एवं बहू बेटियों की इज्जत के साथ खेलनेवालों के विरुध्द आवाज उठाती, आत्ममग्नता की बाँसुरी को तोड़कर मशाल में परिवर्तित करती आदिवासी स्त्री अब अपनी आत्मसम्मान की लड़ाई लडने के लिए तैयार हो चुकी है। 'और तुम बाँसुरी बजाते रहे' कविता में निर्मला पुतुल कहती हैं-

"इस बार मैं चुप नहीं रहूँगी
छीनकर तोड़ दूँगी तुम्हारी बाँसुरी
कि देखो इस बार
वो मुझे उठाने आ रहे हैं।"[9]

साहित्य में इस समय स्त्री विमर्श की बाढ़ आ गयी है। मानो स्त्री विमर्श पहाड़ों पर रोती और खिड़की से बाहर झाँककर मुस्कुराती स्त्री तक ही सीमित होकर रह गया है। पीठ पर बच्चा बाँधे धान रोप रही और सरकार गिराने-बनाने में लगी स्त्री का ज़िक्र स्त्री विमर्श में कहीं नही है। 'वह जो अक्सर तुम्हारी पकड़ से छूट जाता है' कविता में आदिवासी अस्मिता पर बात करती झड़ावदार औरतों और स्त्री विमर्श में शामिल लेखकों से निर्मला पुतुल सीधा सवाल करती हैं।

"एक स्त्री गा रही है / दूसरी रो रही है
इन दोनों के बीच खड़ी एक तीसरी स्त्री
इन दोनों की बार-बार देखती कुछ सोच रही है
ओ, स्त्री विमर्श में शामिल लेखकों !

क्या तुम बता सकते हो
यह तीसरी स्त्री क्या सोच रही है?"[10]

स्त्री विमर्श में स्त्री श्रम सौन्दर्य की ओर विशेष ध्यान नहीं दिया गया। नारी श्रम सौंदर्य की महत्ता को प्रतिपादित करना निर्मला पुतुल की कविताओं की अपनी खास विशेषता है। जो उन्हें समकालीन कवियित्रियों से अलग सिध्द करती है। 'एक माँ का अपराध' कविता में पारिवारिक जिम्मेदारियों और महँगाई से लड़ते हुऐ भी अपनी बेटी की शिक्षाव्यवस्था का उचित प्रबंध न करपानेवाली माँ के अंतरात्मा के पीड़ा की आवाज है। 'माँ' कविता में निर्मला पुतुल जी ने माँ की ममता को धरती की सहनशीलता के साथ जोड़ते हुए दिन में जगते और रात में ऊँघते, बिना रुके-थके अनवरत चलनेवाली संघर्षयात्रा का चित्रण किया है। निर्मला पुतुल कहती हैं, -

"लेकिन घड़ी का चलना-रुकना / कुछ भी बजना न बजना
कोई मायने नहीं माँ के लिए / उसे तो बस चलना ही चलना
दिन में जगते / और रात में ऊँघते हुए बस चलना ही चलना।"[11]

निर्मला पुतुल ने 'पहाड़ी यौवना' कविता में पहाडी स्त्री के श्रम सौन्दर्य का सुंदर चित्रण किया है। पहाड़ी यौवना समस्त बदन पट्टू से लपेटे, माथे पर डाटू बाँधे, पीठ पर किल्टा लिए नग्न नाजूक पाँवो से, अल्हड़ मस्तानी चाल से निकल पड़ी है सेब बागानों की और। जहाँ से बेचने के लिए वह ले आएगी कुछ घास - छिल -नोचकर। नदी, नालों, पर्वतों, हसीन वादियों में भटकती पहाड़ी यौवना बसंत बन छा गयी है प्रकृति में। मानो पहाड़ी यौवना में केदारनाथ अग्रवाल की ' बसंती हवा' का नवसंचार हुआ है। श्रम सौंदर्य से सजी धजी 'पहाड़ी यौवना' को देखकर कुछ पल के लिए प्रकृति भी अपनी सुध-बुध खो बैठी है। प्रकृति, नारी और श्रम सौन्दर्य का अदभुत समन्वय अन्यय दुर्लभ है। निर्मला पुतुल कहती हैं,-

"कुछ पलों के लिए / थम सी गई है दुनिया
देखो कहाँ कुछ हिल रहा है / पृथ्वी नाचना भूल गई है
सूरज आवाक् है / खूबसूरत पहाड़िन
पीठ पर किल्टा में पहाड़ सा समय लिए
खड़ी है और बन्द हो रहे हैं
उत्सव के सारे पट ... ।"[12]

' गजरा बेचनेवाली स्त्री' खुद बदसूरत होते हुए भी दूसरे को सुंदर बनाने के लिए सुन्दरता बेच रही है। उसने गजरों में फूलों के साथ अपने कई अरमान भी पिरोए हैं। जब गजरेवाली स्त्रियाँ इस के सपनों मे आकर उसकी असुन्दरता का उपहास उड़ाने लगती है तब उसे अपने ही हाथों गजरों में पिरोए गये फूल शूल बनकर उसके सीने में चुभने लगते हैं। जहाँ उपहास उड़ाने के अवगुण से गजरे वाली स्त्रियों के चरित्र का अवमूल्यन होता है। वहीं गजरा बेचनेवाली बदसूरत स्त्री के पाँवो की फटी बिवाइयों के बावजूद परोपकारिता, संवेदनशीलता,संघर्षशीलता तथा श्रमशीलता जैसे गुण उसके चरित्र को निखारते हैं। गजरा बेचती बदसूरत और गजरा पहनी खूबसूरत स्त्रियों के अंतर-बाह्य चरित्र के बेनकाब करती हुई निर्मला पुतुल कहती हैं-

"अजीब विडम्बना है कि
सुन्दरता बेचने वाली इस असुन्दर स्त्री के
सपनों में आती हैं / कई - कई गजरे वाली स्त्रियाँ
और इसका उपहास करती हुई / गुम हो जाती है आकाश में
तब गजरों में पिरोए फूल काँटे की तरह
चुभते हैं उसके सीने में।"[13]

अपनी जमीन के साथ अभिन्न रुप से जुड़ी निर्मला पुतुल अपने लक्ष्य के प्रति पूर्णतः समर्पित है। 'आपके शहर में, आपके बीच रहते, आपके लिए' महानगरों की चकाचौंध में खो गयी अपनी आदिवासी बहनों की तलाश करती एक बेचैन बहन की पीड़ा की प्रामणिक अभिव्यक्ति है। जिसके लिए दिल जंग जगा हुआ ताला और प्रेम-प्यार जैसे शब्द जिन्दगी की भाग - दौड़ में खो गयी चाबी हो वह किसी आकर्षण में फँसकर अपने लक्ष्य से कभी विमुख नहीं हो सकती। अपने लक्ष्य को पूर्ण कर वह गाँव लौटना चाहती है। जहाँ कई आँखें उम्मीद लगाए बेसब्री से उसके लौटने का इंतजार कर रही हैं। निर्मला पुतुल कहती हैं,-

"मुझे वापस लौटना है अपने देश / और उस पहाड़ पर खिलना है
जहाँ बैठ बाँसुरी बजाता कोई मेरा इंतजार कर रहा है
जिसके संबल और विश्वास ने मुझे
यहाँ तक पहुँचने का रास्ता दिया
उस सोहागिनी और कमोली टुडू के लिए वापस लौटना है मुझे
जिसके भीतर अपनी बेटियों के वापस लौटने की उम्मीद बची है
मेरे वापस लौटकर ख़बर लाने तक
अपनी माँ के लिए वापस लौटना है हमें
जिसकी आँखों में माया की तरह मेरे भी
गुम हो जाने की आशंका बनी है।"[14]

विपरीत स्थितियों से लड़ते हुए अपने निर्धारित लक्ष्य की ओर कदम बढाने की साहसिकता और संकल्पबध्दता निर्मला पुतुल की कविताओं में स्पष्ट रुप से देखने को मिलती है। निर्मला पुतुल ने ' स्त्रियाँ लिखेंगी अपना इतिहास' कविता में पुरुषप्रधान व्यवस्था द्वारा लिखे गये स्त्री जीवन के एकांगी इतिहास की पोल खोली है। स्त्री जीवन का इतिहास लिखनेवालों ने मात्र उसकी आँखों से बहते आँसू, लहराते आँचल, बादल बनकर बरसती जुल्फों, चूड़ियों की खनखनाहट और पायलों की झनकार को ही उसमें दर्ज किया। पुरुष प्रधान व्यवस्था की संकीर्ण मानसिकता द्वारा लिखे गये इस एकांगी इतिहास के विरुध्द विद्रोह का बिगुल बजाती निर्मला पुतुल इतिहास में अपने संघर्ष को दर्ज़ कराने की अपनी संकल्पबध्दता को दोहराती हुए कहती हैं -

"फूटेगा एक नया विद्रोह का बिगुल
हम भूगोल की सारी सीमाएँ लाँघकर
पहुँच जाएँगे इतिहास के उस गलियारे में
और दर्ज करेंगे अपना सशक्त हस्ताक्षर
हम समय की छाती पर पाँव रखकर
चढेंगे इतिहास की सीढ़ियाँ / और बुलंदियों पर पहुँचकर
फहराएँगे अपने नाम का झंडा
कुछ इस तरह / हम स्त्रियाँ दर्ज कराएँगी
इतिहास में अपना इतिहास।"[15]

सारांश :-

निर्मला पुतुल समकालीन हिंदी कविता की शीर्षस्थ कवयित्री हैं। जिनकी कविताओं के केंद्र में आदिवासी स्त्री जीवन रहा है। निर्मला पुतुल के काव्य-संग्रह 'बेघर सपने' में सदियों से हाशिए पर जीवन जीने के लिए विवश आदिवासी स्त्री की यातना से उपजी चेतना के विविध रंग है। पितृसत्ताक समाज की विसंगतियों एवं विडम्बनाओं को बेनकाब कर

निर्मला पुतुल स्त्री को देवी के रुप में पूजने की अपेक्षा उसे इंसान के रुप में स्वीकार किये जाने की आवश्यकता पर बल देती है। निर्मला पुतुल के लिए स्त्री देह सौंदर्य की अपेक्षा श्रम सौंदर्य अधिक महत्वपूर्ण है। श्रम के प्रति निष्ठा उनकी कविताओं की प्रमुख विशेषता है। स्त्री विमर्श में श्रम सौंदर्य को पुर्नस्थापित कर निर्मला पुतुल ने 'निराला' जी की 'वह तोड़ती पत्थर' की परम्परा को विकसित किया। अपने अस्तित्व एवं आत्मसम्मान की लड़ाई लड़ते हुए एक नया इतिहास लिखने की संकल्पबध्दता निर्मला पुतुल की कविताओं में पायी जाती है। कुल मिलाकर निर्मला पुतुल का काव्य-संग्रह 'बेघर सपने' स्त्री विमर्श को उसकी व्यापकता एवं समग्रता में देखने की एक नवीन दृष्टि प्रदान करता है।

संदर्भ :-

1. संपा. प्रो.श्रीराम शर्मा, समकालीन हिंदी साहित्य: विविध आयाम, पृ.53-54
2. निर्मला पुतुल, बेघर सपने,फ्लैप
3. निर्मला पुतुल, बेघर सपने, पृ.104
4. वही, पृ.16
5. वही, पृ.24
6. वही, पृ.14
7. वही, पृ.87
8. वही, पृ.88
9. वही, पृ. 21
10. वही, पृ.18
11. वही, पृ.12
12. वही, पृ.44
13. वही, पृ.33
14. वही, पृ.48
15. वही, पृ.74-75